Original Research Paper

Volume - 7 | Issue - 5 | May - 2017 | ISSN - 2249-555X | IF : 4.894 | IC Value : 79.96

Hindi

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'अंतर्वंशी' में प्रवासी जीवन संघश

पूनम

हिन्दी विभाग गाँव – झोझु खुर्द, जिला – भिवानी (127310)

KEYWORDS :

कथाकार समीक्षक असगर वजाहत का यह कथन कि ''न तो प्रवास कोई नई स्थिति है और ना ही प्रवासी साहित्य की नई खोज लेकिन बीसवीं शताब्दी में भारतीय मूल के लोगों ने एक देश में नहीं बल्कि लगभग संसार के हर कोने में जिस अस्मिता को जगाया है और जो पहचान स्थापित की है वह इससे पहले सम्भव न थी। आज का भारतीय प्रवासी पहले के प्रवासी से भिन्न है। प्रवास के इस युग में तकनीकि और विज्ञान ने दूरियों को कम करने के साथ–साथ सांस्कृतिक आदान–प्रदान के रास्ते प्रशस्त भी किया है। आज प्रवासी भारतीय के लिए भारत दूर होते हुए भी पास है। प्रवास देश की संस्कृति से भी उसका सम्बन्ध बना हुआ है।''[1] स्पष्टतः असगर वजाहत का कथन यही दर्शाता है कि प्रवासी संस्कृति से तात्पर्य प्रवास देश की स्थानीय संस्कृति और भारतीय संस्कृति के द्वन्द्व और सम्बन्ध से उत्पन्न संस्कृति से है। उषा प्रियवंदा का उपन्यास इन्हीं संस्कृतियों का समवाय आख्यान है।

उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'अंतर्वंशी' इसी पूरब और पश्चिम अर्थात् भारत और अमेरिका की संस्कृति का द्वन्द्व या समन्वय को दिखाता है। उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों में प्रवासी भारतीय स्त्री चरित्र का चित्रण किया है। वे अपने उपन्यासों के कथा संसार यद्यपि अमेरिका को रखती हैं, लेकिन वे सदैव इस बात से सचेत रहती हैं कि उपन्यास केवल अमेरिकी या केवल भारतीय परिवेश में सिमट कर न रह जाए, जो वह साहित्य के मानवीय संस्कारों से साधारणीकरण करती हुई प्रतीत होती हैं।

स्वातंत्र्योत्तर अस्तित्ववादी चिंतन से प्रभावित होकर लिखने वाली प्रवासी महिला लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का नाम सबसे अग्रणी है तथा उनका रचना कर्म एक विशिष्ट प्रकाशदीप की तरह है। इन्होंने प्रवासी भारतीय नारी की विसंगतियों को सोचा, समझा और औपन्यासिक कृतियों में उन्हें आत्मसात किया है। उषा प्रियंवदा ने नारी जीवन की विसंगतियों को इंगित कर उसके आधुनिक रूप का स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों में और उनकी मनःस्थितियों को बहुत गहराई से आंका है। एक भारतीय या प्रवासी भारतीय नारी के द्वन्द्व को और उसका चित्रांकन करने में लेखिका का स्वप्न संसार पूरे तरीके से सफल सिद्ध होता नजर आता है।

'अंतर्वंशी' उपन्यास में सुबोध राय का प्रसंग सुनियोजित ढ़ंग से शामिल करने का उद्देश्य प्रवासी भारतीय युवा पीढ़ी का एक और रूप उजागर करना है। गाड़ियों की खरीद–फरोख्त तो एक बहाना मात्र है। लेखिका का मुख्य फोकस बिन्दु ''अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के पात्रों और परिवारों की जिन्दगी को उनके आपसी व्यवहार, संबंधों और संघर्षो को गहरी अंतर्दृष्टि और पर्यवेक्षण सामर्थ्य से उद्घाटित करना है। उषा प्रियंवदा इस पूरे परिदृश्य में स्त्री–जीवन को केन्द्रित करके देखती है।

सन् 2000 ई० में प्रकाशित उषा प्रियंवदा का यह उपन्यास 'अंतर्वंशी' उन तमाम भारतीयों के मानसिकता का परिचय देता है, जो यह सोचते हैं कि पाश्चात्य देश में भौतिक सुख–सुविधाओं के साथ–साथ सम्बन्धों का खुलापन रूप उन प्रवासी भारतीयों के जीवन को आसान बनाता है। लेकिन अंततः यह उपन्यास इस पूरी परिघटना को एक मात्र मिथ के रूप में साबित करता है। उषा जी कि यह टिप्पणी की ''यह उपन्यास उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन शैली का विश्लेषण करता है। जो बेहतर अवसरों की तलाश और आशा में प्रवासी हो जाते हैं विदेश में बसे युवकों से मध्यवर्गीय कन्याओं का विवाह सौभाग्य समझा जाता है और फिर शुरू होता है संघर्श और मोहभंग का अटूट सिलसिला।''[2] बिल्कुल सटीक बैठता है।

अमेरिका में बसी प्रवासी नारियों को भारतीय परिधान से मोह होते हुए भी वहाँ के पाश्चात्य परिधान के प्रति झुकाव का भी साधारणीकरण हो जाता है। भारतीय संस्कार लिए एक प्रवासी स्त्री का वहाँ के परिधान को सहज स्वीकार्य दर्शाता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में अभी भी यह ग्रामीण परिवेश में सहज स्वीकार्य नहीं है। विदेश में रहकर भी अपने देश के प्रति गहरा जुड़ाव बना रहता है। वहां रहते हुए भी ''मन तो भारतीय रहता है और ऊपर त्वाचा भी।'' भारत में अभी भी स्त्रियों के मन में गहनों के प्रति सहज और उत्कृष्ट लालसा होती है। भारत की तुलना में पाश्चात्य देशों में गहनों को स्त्रियाँ बहुत ज्यादा तरजीह नहीं देती हैं। लेकिन भारत से गई नारी का मन गहनों के प्रति सहज आकर्षण को नहीं त्याग पाता। अमेरिका में बनारस की 'चुनमुन' अर्थात् वाना का कथन ''अपने लिए पाँच हीरोवाली लौंग खरीदूँगी।''[3] स्त्री का गहनों से सहज मनोविज्ञान है। 'अंतर्वंशी' उपन्यास प्रवासी भारतीयों की संघर्श कथा है जो हर स्थिति में वहां रहना चाहते हैं।

लेखिका ने अपने इस उपन्यास में भारतीय संस्कृति और अमेरिका की संस्कृति दोनों को एक साथ देखा है और दोनों की किन्हीं बिन्दुओं पर समानता देखती है। भारत में नारी की बेबसी और अमेरिका में माँ–बाप, दादा–दारी आदि सम्बन्धों को कानूनी रूप में देखने का प्रयास किया है। ''एक तो हमारी औरतें पिट–कुट लेंगी, चुप रहेंगी, पति के खिलाफ जवान नहीं खोलेंगी और कुछ दिन बाद आसरे से घर लौट आयेंगी।'' और तो और बच्चे मां को यहाँ तिरस्कार से कहने लगे हैं ''तुम काली हो, गंदी हो, तुम रंग–बिरंगे देवताओं को पूजती हो। हम नहीं उतारेंगे जूते कोई अमेरिकन जूते उतारकर रहता है। घर में हम नहीं खायेगें यह पीले रंग की दाल हमें चाहिए पीज्जा, हेमबर्गर, हौट–डौग।''[4]

अमेरिका में बसे भारतीयों के सम्बन्ध में जो मिथ है उसका परिचय और उसका वास्तविक स्वरूप दोनों का चित्रण है अंतर्वंशी। ''यह सब सोचते होंगे कि चुनमुन बिटिया अमेरिका में रानी बनकर रह रही है। वहाँ निरन्तर बिजली पानी चलता है। खाने की इफरात, चिट्ठी रसा तक गाड़ी पर चढ़कर डाक बाँटता है।'' लेकिन यह तो उनके कल्पना से परे होगा कि अमेरिका में चुनमुन बिटिया का अपना घर कब होगा ? क्या मालूम ?'' घर से बाहर रह रहे भारतीयों की मनःस्थिति कमोवेश वही रहती है, चाहे वह जहाँ भी रहे, अमेरिका या भारत में। उन्हें अपने समृद्धि का खोखला और थोथा रूप ही सही दिखाने की आंकाक्षा तीव्र रहती है, उनकी सोच सदैव यही रहती है कि ''भारत में सब मिलता है, पर अपनी समृद्धि की नुमायश करने का भी एक सुख होता है।''[5] भारतीय नारी की अमेरिकी नारी बनने की ललक की मनःस्थिति के रूप में वाना की इच्छा कि कभी–कभी मन होता है कि तुम्हारी तरह स्कर्ट और सुएड़ के बूट पहनकर स्मार्ट ली नौकरी पर जाऊँ। अपनी निजी गाड़ी हो, सर्राटे से चलाऊँ, अमरीकनों की तरह फर–फर अंग्रेजी बोलू। कमोवेश आधुनिक दौर में एक सशक्त नारी की मनोकांक्षा अवश्य हो सकती है।

लेखिका का प्रवासी भारतीयों पर केन्द्र करके लिखा यह उपन्यास एक भारतीय नारी की नास्टेल्जिया कि ''भारत में क्या उपलब्ध नहीं है, मेरे लिए तो वही सब कुछ है, मेरा भविष्य, मेरी महत्त्वकाक्षांए, माँ–बाप। अपने देश को कुछ वापस देना चाहती हूँ।'' का रेखांकन है तो अपने को वहाँ मंच पर स्थापित करने की हर संभव कोशिश। क्योंकि उनके सामने का परिदृश्य यह कि ''यहाँ आकर कोई वापस नहीं जाता।''[6] उनके अंतर्मन को झकझोर कर देता है। शेषयात्रा की अनुका पति की निर्ममता कि शिकार है और वहाँ समस्या पति–पत्नी के सम्बन्धों के बीच दरार आ जाने के कारण है। अनुका का पति जब यह ठान लेता है कि सम्बन्धों की सीमा रेखा का यह अंतिम बिन्दु है तो वह निरीह पत्नी को त्यागने के लिए स्वतन्त्र है, लेकिन अंतर्वंशी की वाना सम्बन्ध के कर्त्तव्य बोध से, नैतिक आग्रहों को सिर्फ इसलिए ढोती चलती है क्योंकि दूसरे पार जो व्यक्ति है उसके परित्याग का पर्याप्त कारण जुटाने में भारतीय नारी मन अपने को तैयार नहीं पाता। शायद इसीलिए वह सारिका को समझाती है कि ''अगर वह लौटकर आएँ, तो उन्हें मना मत करना सारिका। बाद में वहीं वाना अमेरिका में रहकर उसके जीवन संस्कृति को जीकर भारतीय नैतिकता का पाठ–पढ़ाने वाली कहती है ''शिवेश आई म लीवींग यू ..... में तुम्हें छोड़ रही हूँ शिवेश।''[7] एक तरफ जहाँ स्त्री स्वतन्त्र्य के प्रश्न के उत्तर की सही तलाश होती है तो सदियों से चली आ रही परम्परा की पति चाहे जैसा भी हो पत्नी को उसी के साथ रहना है पर एक गहरा, और व्यंग्य के साथ चोट करती है। हालांकि ऐसे फैसले अमेरिकी समाज में नई बात नहीं है।

वाना का शिवेश को त्यागने का निर्णय और उसका यह कथन कि मैं तुम्हें छोड़ रही हूँ। शिवेश, उसके अतीत के कथन कि ''क्या विवाह सम्बन्ध इतनी आसानी से तोड़ा जा सकता है ? क्या जब तक कोई अधिक आकर्षक न मिले तभी तक निभाने के लिए है।''[8] उसके स्वयं के ऊपर ही सम्बन्धों की सीमा का करारा व्यंग्य साबित होता है।

लेखिका का भारत और अमेरिका के अन्तर को समझाते हुए यह कहना कि ''मैं क्यों भूखा रहूँ ? यह कोई भारत है ? यह अमेरिका है अमेरिका।'' अमेरिकनों की अपनी समृद्धि का दंभ और आत्ममुग्धता पर चुटकी है तो एक बच्चे का अपनी माँ के प्रति यह कथन कि – ''मैं अभी पुलिस को फोन करता हूँ कि मेरी माँ मुझे मार–पीट रही है।''[9] वहाँ के स्वच्छन्द जीवन संस्कृति पर व्यंग्य है।

यह उपन्यास अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीयों और उनके परिवारों की जिन्दगी का उनके आपसी सम्बन्धों और संघर्षो को गहरी अंतर्दृष्टि और पर्यवेक्षण शक्ति से उद्घाटित करता है। अमेरिकी समाज की स्त्री के अनुभव की प्रामाणिकता और गहन संवेदनशीलता से युक्त रचनाओं की श्रृंखला में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में विडम्बनापूर्ण नियति का चित्रण किया है। अंतर्वंशी में उस आधुनिक भारतीय नारी की तस्वीर उकेरी गई है जो कठिन और विपरित परिस्थितियों में भी अपने लिए नया और सार्थक मार्ग चुन पाने में समर्थ हो रही है। शायद यही कारण है कि यह पूरा उपन्यास प्रवास में भारतीयों के सम्बन्धों के उठा पटक की कथा है। अंतर्वंशी उपन्यास मुख्य रूप से प्रवासी परिवारों के सन्दर्भ में स्त्री जीवन चरित्र पर लिखा है। जो अपनी अलग– अलग परिस्थितियों में फंसी स्त्री की कथा है। संघर्ष के अनेक रूप, उससे निपटने की अपनी अलग शक्ति और उसकी अपनी नियति है। पर उन्हें उस परिस्थिति में धकेलने के पीछे किसी न किसी पुरुष की उपस्थिति अनिवार्य है। चाहे वह अंजुयन हो, सारिका हो, कम्मो हो या सुबोध राय की पत्नी हो। अंजुमन और सारिका अपने निर्णय लेने में दृढ़ संकल्पता दिखाती हैं परन्तु और अन्य स्त्रियों में क्षमता का अभाव दिखता है। जैसे वाना हमेशा असंमजस और अनिर्णय की मानसिकता लेकर छटपटाहट दिखती है। जो अपने अन्दर की शक्ति देखने के बजाए बाहरी शक्ति की तलाश करती दिखती है और साथ यह भी है कि वह बाह्य सामर्थ्य का उपयोग अवसर मिलने पर करती भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 श्याम त्रिपाठी (सम्पा०), सुधा ओम ढींगरा, हिंदी चेतना, अंक 64, Onterio Canada, पृ० 91
2 उषा प्रियंवदा, अंतर्वंशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2004, आवरण पृश्ठ
3 वही, पृ० 7, 13
4 वही, पृ० 59
5 उषा प्रियंवदा, अंतर्वंशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं० 2004, 67, 70
6 वही, पृ० 72, 79
7 वही, पृ० 82, 241
8 वही, पृ० 152
9 वही, पृ० 169